मुरली क्लास 26-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

म्युजियम दादादर्शनी में भी समझाना है क्योंकि सभी है बेसमझ। यह तुम समझते हो कि यह है पुरुषोत्तम संगम युग। समझदार तो सिर्फ तुम ही हो तो तुमको समझाना पड़ता है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। सबसे जास्ती सर्विस स्थान है म्युजियम। वहां बहुत आते हैं। अच्छे सर्विस एबुल बच्चे भी बहुत कम है। सर्विस स्टेशन सभी सेन्टर्स है। सेन्टर से है देहली में स्पीचुअल म्युजियम। इस अक्षर का भी ठीक अर्थ निकलता नहीं है। पूछते हैं आप भारत की क्या सेवा कर रहे हो। हैं तो जंगली लोग। भगवानुवाच है नायह जंगल है। तुम संगमयुग पर हो। न फोरेस्ट के हो न गार्डन के हो। अभी गार्डन में जाने पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी इस रावण राज्य को रामराज्य बना रहे हो। तुम से पूछते हैं इतना खर्चा कहां से आता है? बोलो यह तो हम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां ही करते हैं। रामराज्य की स्थापना हो रही है। तुम नहीं जानते हो हम क्या कर रहे हैं। आकर समझो हम क्या कर रहे हैं। एमआब्जेक्ट क्या है। सावरन्टी को मानते नहीं इसलिए सावरन को भगा दिया। तभी तुम तमोप्रधान गंदे बन गये हो। तो वह भी अच्छी नहीं लगी। ड्रामा अनुसार उन्हों का भी दोष नहीं। ड्रामा में जो कुछ होता है वह हम पार्ट बजाते हैं। कल्प2 यह पार्ट चलता है। बाप द्वारा स्थापना का। खर्चा भी तुम बच्चे ही करते हो। अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। और तो किसको पता भी नहीं है। तुम्हारा नाम मशहुर है। अननोनवारियर्स। अननोन वारियर्स कब होती नहीं हैं। अननोनवारियर्स तो बहुत तो हो न सके। सिपाही लोग का तो सारा रजिस्टर रहता है ना। ऐसा तो कोई हो न सके जिसका नाम नम्बरवार न हो। रजिस्टर में। अननोनवारियर्स तो तुम हो। तुम्हारा कोई रजिस्टर में नम्बर नहीं कोई हथियार पकड़ा नहीं। जिसमानी हिंसा तो है नहीं। योगबल से तुम विश्व पर जीत पहनते हो। ईश्वर सर्वशक्तिवान है ना। याद से तुम शक्ति लेरहे हो। सतोप्रधान बनने लिए तुम बाप से योग लगा रहे हो। सतोप्रधान बने फिर सतोप्रधान राज्य चाहिए। सो तो तुम स्थापन कर रहे हो। किसके मत पर? वह भी गुप्त। निराकार को गुप्त भी कहा जाता है। जब आकर इन में प्रवेश करते हैं। नहीं तो गुप्त उनको कहा जाता है जो परन्तु देखने में न आता हो। शिव बाबा भी है पर इन आंखों से नहीं देख सकते हो। तुम भी गुप्त बाप भी गुप्त, उनसे शक्ति ले रहे हो। बच्चे जानते हैं हम पतित से पावन बनते हैं। पावन में शक्ति होती है ना। सतयुग में पावन होंगे। उन्हों की ही 84 जन्मों की कहानी बाप बताते हैं। बाप से शक्ति ले पवित्र बन फिर से पवित्र दुनिया का राज-भाग ले रहे हो। बाहुबल से कब कोई विश्व पर जीत पहन न सके। यह है योगबल की बात। वह लड़ते हैं राज्य तुम्हारे हाथ में आता है। तुम्हारी है सारी योगबल की बात। सर्वशक्तिवान बाप है उनसे शक्ति मिलनी चाहिए। यहां बैठे तो हो तुम बाप को और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हो। तुम जानते हो हम स्वदर्शन चक्रधारी बन रहे हैं। कोई को स्मृति है कोई को नहीं। सभी को नहीं रहती। यह स्मृति होनी चाहिए सृष्टि के आदि मध्य अन्त, रचयिता और रचना को हम जानते हैं। तुम बच्चों को ही नालेज मिलती है। बाहर वाला तो कोई समझ न सके। इसलिए बुलाया नहीं जाता है। पतित-पावन बाप को सभी पुकारते हैं। परन्तु अपन को पतित समझते नहीं हैं। ऐसे ही तोते मिशल बोलते रहते हैं। यह भी नहीं जानते पावन दुनिया और यह पतित दुनिया है। गाते रहते हैं पतित-पावन... गांधी जी गीता भी लेते थे। पिछाड़ी में भोग उल्टा लगाते थे। सभी है ब्राईड्स ग्रुप है ब्राईडग्रुम। वह आते ही हैं सर्व की सदगति करने। तुम बच्चों को श्रृंगार कराते हैं। तुमको डबल ईंजिन मिली है ना। ऊंच ते ऊंच चढ़ाई होती है तो तो दो ईंजिन लगाते हैं। बाप बड़ी ईंजिन है रोल्स-रायल्स। रोल्स रायल्स में ईंजिन बड़ी अच्छी होती है। बाप भी ऐसे ही हैं। कहते हैं हे पतित पावन आओ हम सभी को ले जाओ। पतित को पावन बना कर साथ में ले जाओ। तुम बैठे हो बिगुल बजाये। तकलीफ की कोई बात नहीं। बाप को याद करते रहो, जो श्रेष्ठ मिले रास्ता बताते रहो। (विच्छ का मिशाल) बापू कहते हैं मेरे जो भक्त है। ल०ना० के भक्त, कृष्ण के भक्त हो राम के भक्त हो उनको यह दान देना। व्यर्थ न गवाना। पात्र

को ही दान दिया जाता है। पतित मनुष्य तो पतितों को दान देते रहते हैं। पतित को दान देने से पतित ही बनेंगे। और ही कदम नीचे उतरना पड़ता है। अभी तुम समझते हो ड्रामा प्लेन अनुसार बाप खुद आकर समझाते हैं। वास्तव में मैं शक्तिवान नहीं हूं। राम और रावण। वह डूबोते हैं वह बढ़ाते हैं। वह विकार में जाकर गिरते ही जाते हैं। रावण सभी को डूबोते हैं। बाप है सर्वशक्तिवान। उन से तुम शक्ति ले कर सभी को उत्तम बनाते हो। रावण कब आते हैं वह भी संगम हुआ कलियुग और सतयुग का। वह फिर होंगा त्रेता और द्वापर। वह दिन वह रात। ब्रहमा का दिन-रात यह अक्षर शास्त्रों में है। सुनाते भी है ज्ञान ब्रहमा का दिन, भक्ति ब्रहमा की रात। ज्ञान कितना समय, भक्ति कितना समय चलती है वह भी समझते नहीं। तो यह सभी बातें समझ कर फिर समझाते हैं। मुख्य बात है बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप आते हैं तो पुरानी दुनिया का विनाश होता है। महाभारत लड़ाई कब लगी जब मैं ने राजयोग सिखाया था। समझ में आता है नई दुनिया का आदि, पुरानी दुनिया का अन्त है। दुनिया तो घोर अंधियारे में पड़ी है। अभी उनको जगाना है। आधा कल्प सोये पड़े हैं। बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझ भाई2को देखो। भाई को ज्ञान दो तो तुम्हारे में वाणी में ताकत भरेंगी। आत्मा ही पावन और पतित बनती है। आत्मा पावन बनती है तो शरीर भी पावन मिलती है। अभी तो मिल न सके। पवित्र तो सभी को बनना है। कोई योगबल से कोई सजा से। मेहनत ही है याद की यात्रा में। बाबा बार बार समझाते रहते हैं। बच्चों को प्रेक्टीस भी कराते हैं। सिखलाते हैं। कहां भी जाओ तो बाप को याद में जाओ। जैसे पादरी लोग शान्ति में क्राईस्ट के याद में जाते हैं। वह क्राईस्ट को याद करते हैं। प्रायः पोप भल बड़ा है परन्तु क्राईस्ट को याद करते हैं। यहां भारतवासी तो अनेकों को याद करते रहते हैं। बाप कहते हैं एक सिवाय और कोई को याद न करो। बेहद के बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा का हम हकदार है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति तो मिलती ही है। सतयुग में सभी जीवन मुक्त थे। कलियुग में सभी जीवन बन्धन में हैं। यह किसको भी पता नहीं है। न शास्त्रों में है। इसलिए बाप कहते हैं भक्ति के शास्त्र सुनो ही नहीं। भक्ति तो आधा कल्प की अभी तो संगम युग है। बाप आकर ज्ञान सिखलाते हैं। गायन है भगवान आकर फल देते हैं जीवनमुक्ति का। यह बातें समझकर और समझाना है। बाप बच्चों को समझाते हैं। बच्चे फिर बाप को शो करने चारों तरफ चक्र लगाते रहते हैं। तुम्हारा फर्ज है। मनुष्य मात्र को यह मालूम हो ना चाहिए यह पुरुषोत्तम संगम युग है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो सभी पाप कट जायेंगे। यह है सच्ची गीता जो बाप समझाते हैं। वह भक्ति मार्ग की गीता पढ़ते2 यह हाल हुआ है। मनुष्य मत से कैसे गिरे हैं और भगवान के मत से तुम वर्सा ले रहे हो। मूल बात बाप समझाते हैं उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद भी करते रहो। और परिचय भी देते रहो। बीज तो है ना। फ्री देने में हर्जा नहीं है। परन्तु पात्र देखकर देना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं। बाप बच्चों को डोरापा देते हैं तुम लौकिक बाप को भी याद करते हो, पारलौकिक बाप को भूल जाते हो। लज्जा नहीं आती। तुम पवित्र प्रवृति मार्ग के गृहस्थ व्यवहार में थे फिर अभी पवित्र बनना है। तुम हो भगवान के सागिर्द(स्टुडन्ट)। अपने अन्दर देखो कहां बुद्धि भटकती तो नहीं है। बाप को कितना समय याद किया। वह गठर वेश्यालय में ले जाते हैं। बाप शिवालय में ले जाते हैं। बाप समझाते हैं और संग तोड़ो और एक संग जोड़ो। भूल नहीं करनी है।

यह भी समझाया है भाई भाई के दृष्टि से देखो। तो देह न देखेंगे। दृष्टि बिगड़ेगी नहीं। मंजिल है ना। यह ज्ञान अभी ही तुमको मिलता है। भाई, भाई तो सभी कहते हैं। मनुष्य कहते हैं ब्रदरहुड। यह तो ठीक है परमपिता परमात्मा के हम सन्तान हैं। फिर यहां क्यों बैठे हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तो

ऐसे-ऐसे समझाते उन्नति को प्राप्त करते रहो। बाप को सर्विसएबुल बच्चियां बहुत चाहिए। सेन्टर्स खुलते जाते हैं। समझते हैं बहुतों का कल्याण होगा। परन्तु सेन्टर सम्भालने वाली भी चाहिए। सर्विस एबुल अच्छी महारथी चाहिए। टीचर्स में भी नम्बरवार हैं ना। म्युजियम में भी बहुत अच्छी2 चाहिए। बाप कहते हैं जहां ल0ना0 का मंदिर हो, शिव का मंदिर हो, गंगाका कंठा हो। जहां भीड़ भी होती है हो वहां सर्विस करनी है। समझाओ तुम ने कोस घर खोला है। भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम फिर यह बना कर देते हो। यह तो तुम पापात्मायें हो क्यों कि तुम ने बना कर दिया है। ऐसे2 समझा कर हाल लो। पहले किरायादे×। फिर समझते2 आपे ही दे देंगे। वह समझते हैं पुण्य का काम है और तुम समझाते हो यह पाप का काम है। उन्हों को चिट्ठी लिख समझाओ। तो हाल तुमको मिलेंगे। श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है। यहां तुम ईश्वर के घर में हो। सात रोज भट्ठी में रहते हो। जो परिवार के साथ रहते हो। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। नमस्ते।

रात्रिक्लास 27-4-68 ओमशान्ति

बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद के बाप से तुम पदमा-पदमभाग्यशाली बनते हो। दुनिया जानती ही नहीं भगवान पढ़ा सकते हैं। यहां तुम पढ़ते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम ऊंच ते ऊंच जाने लिए पढ़ रहे हैं। कितना फराक दिल होना चाहिए। बाप के ऊपर तुम कर्ज चढ़ाते हो। ईश्वर के अर्थ दे कर कर्ज चढ़ाते हो। फिर दूसरे जन्म में उसका रिटर्न लेते हो। बाबा को हमने सभी कुछ दिया तोबाप को सभी भी सभी कुछ देना पड़ेगा। क्या मैं भूख मरता हूं। जो भी बच्चे हैं भल काम न भी करते हैं तो भी भूख तो नहीं मरते। उनके सिर जमा होता जाता है। शिव बाबा को दिया यह कब खयाल में न आना चाहिए। बहुतों के अन्दर चलता है। हम ने इतना दिया हमारी खातरी क्यों नहीं होती है। अरे× मूट्ठी दिया है खाते भी हो ना। कि रखा होगा। काम न करते हैं तो खाते 2 खलास कर देते हैं बाकी बचा ही क्या। वह वह नशा खत्म हो जाता। पैसा देते हो। दिल जानती है हम तो बाबा से विश्व की बादशाही ले रहे हैं। बाप तो दाता है ना। राजायें बड़े ही रायल होते हैं। पहले2 जब मुलाकात होती है तो हम नज़राना देते हैं तो वहकब हाथ में नहीं लेते। ईशारा करेंगे प्रसनल सेक्रेट्री को। हाथ में लेने का कायदा नहीं है। तो शिव बाबा जो दाता है वह कैसे लेंगे। यह तोबेहद का बाप है। उनके आगे नज़राना रखते हो परन्तु जानते हो बाबा तो ढेर× देंगे। तो देने का कब भी संकल्पभी न आना चाहिए। हम तो लेते हैं। वहां पदमपति बनेंगे। तुम प्रेक्टीकल में पदमा-पदमभाग्यशाली बनते हो। सन्यासी घर-बार छोड़ कर भी आकर घर में बैठते हैं। तुम बच्चों को समझाना चाहिए अपने हमजिन्स को। निवृति मार्ग वालों को गुरु बनाया है। वहतो आरफन बनाते हैं उनके तुम पांव चुमते हो। लज्जा नहीं आती। तुम्हारे हमजिन्स को आरफन्स बनाकर जाते हैं। बच्चों कोबहुत खड़ा होना चाहिए। के बड़े फराक दिल। कई मनहुस होते हैं। समझते नहीं बाप हमको पदमापति बनाते हैं। हम बहुत ही सुखी बनते हैं। जब परमात्मा बाप गैरहाजिर है तो इनडायरेक्ट अल्प काल के लिए फल देते हैं। जबहाजिर है तो 21 जन्म लिए देते हैं। यह तो गाया हुआ है शिव बाबाका भण्डारा भरपूर। ढेर बच्चे हैं। किसको पता थोड़े ही है। कौन क्या देते हैं बाप और बाप की ब्रोगोयरी ही जाने। जिस में रहते हैं। है साधारण। यहां से बाहर निकलते हैं और सारा नशा खलास। बाबा बहुत ही डिपलोमेट है। ज्ञान और योग नहीं है तो सारा दिन खिट2 चलती रहती है। अच्छे2 बच्चों को भी कोई न कोई बात में हराती ही रहती है। माया बेमुख बहुत करती है। शिव बाबा जिसके पास आते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। अन्दर में अथाह खुशी होनी चाहिए। वह दिन आया आज . . जिसके लिए कहते थे आप आवेंगे तो हम आपे का ही बनेंगे× राज-भाग लेने लिए। भगवान आकर अच्छी एडाप्ट करते हैं कितना खुश नसीब कहेंगे। बाप एडाप्ट करते हैं। तो कितनी खुशी होती है। परन्तु कोई2 तो× तो एडाप्ट बच्चे भी बड़ा तंग कर देते हैं। बाबा तो अन्तु

अनुभवी है ना। सभी बातों का। साधारण बाप समझ भूल न जाना चाहिए। बच्चों को तो बहुतही खुशी होनी चाहिए। यहतो समझाया है बाबा अनुभवी है धंधे आद को राय दे देवे। शिव बाबा तो कहते हैं मैं आता हूं पावन बनाने लिए। कहां यहराय दे सकते हैं। परन्तु ऐसे नहीं जैसे गुरु की राय मिलती है। नहीं। यह तो सम्बन्धी है ना। सभी व्यापार किये हैं। अनुभवी तो है ना। आजकल गवर्मेन्ट का भी ठिकाना नहीं। सारी चाभी बड़े2 आफिसरों के हाथ में है। पहले से ही भाव आद बना देते हैं। सारा दिन इन धंधों में ही बुधि लगी रहती है। सो भी मीठे2 बच्चे जानते हैं बाबा आया है, दुनिया को बदल कर ही छोड़ेंगे। कल्प2 दुनिया बदलती है। बाकी थोड़े ही रोज है। धीर्य धरो। कर्मों का हिसाब किताब बड़ा कठिन है। व्यापार आद में भी हल्के हो जाओ जो बुधि लटक न जाये। बाबा ने छोड़ दिया। व्यापार कितना भी फायदे का हो। लेकिन बाबा से बेहद की बादशाही मिलती है तो हम वह क्या करेंगे। टाईम बहुत थोड़ा... बस आद कोई न कोई चीज निकालते ही रहते हैं। ऐसे न समझना चाहिए बहुत समय रहना है। तैयारी हो रही है। तुम बच्चों के लिए ठहरे हुये हैं। बच्चों की परपक्व अवस्था हो जाये तो लड़ाई लगी कि लगी। बाबा ने समझाया है दिन प्रति दिन टाईम बीतता जाता है। आज फलाना दिन फलाना मास, फलाना सम्बत कल दूसरा। तुम तो कहेंगे अभी सम्बत होगा 4900- बाकी कितना है। तो इस समय पवित्र रहना अच्छा है। छोटे बच्चे वर्सा ले नहीं सकते। टाईम थोड़ा होता ही जाता है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है नई दुनिया के लिए तैयारी करनी है। तुम संगम युग पर पुरुषार्थ करते रहते हो। तो अटेन्शन दो। कहां2 से बच्चे आते हैं। वहां तो हंस जो बगुलों के झुण्ड में जाते हैं। यहां के सात आठ रोज भी तुम्हारी बहुत कीमती है। यहां नशा चढ़ा ही रहता है। हम बाप दादा के पास रहते हैं। इन से ऊंचा परिवार होता नहीं। ऊंच ते ऊंच है ही ब्राह्मणों का परिवार। बच्चों को अथाह अपार खुशी होनी चाहिए। बुधि से काम लो। जिसको ऊंच ते ऊंच बाप पढ़ावे उनको खुशी का पारा कितना चढ़ा रहना चाहिए। जानते हैं बाबा तो हर 5000 वर्ष बाद आकर हमको पढ़ाते हैं। माया खुशी का पारा गवांये देती है। बाप तो कोई तकलीफ नहीं देते। सिखलाते हैं ऐसे है कोई मेहनत नहीं। याद में रहो तो आत्मा को बल मिलेगी। देवतायें भी ब्राह्मणों के भोजन को याद करते हैं। क्योंकि तुम बाप से योग रखते हो। देवतायें थोड़े ही बाप से योग रखते हैं। तुम ब्राह्मण बहुत ही ऊंचे हो। यह कोई भी नहीं जानते।

बाप जीते जी मरने की युक्ति सीखा कर जाते हैं। वापस तो जाना है सभी को। सभी पतित हैं। पावन बनने बिगर जा नहीं सकते। इसलिए पतित-पावन को बुलाते हैं। क्यों कि पावन दुनिया में होते ही थोड़े हैं। जो पावन बनते हैं। बाकी तो जो पावन नहीं बनते वह खत्म हो जावेंगे। बाप आते हैं इतने सभी 50 करोड़ को विनाश को विनाश करने। पतित-पावन को बुलाते ही हैं हमको पावन बना कर नई दुनिया में ले चलो। तो आत्मायें हो जावेंगी ना। सतयुग में होते ही हैं थोड़े। बाकी इतने करोड़ मनुष्य विनाश हो जाते हैं। शंकर द्वारा विनाश नहीं। बम्स और नेचरल कैलेमिटज से विनाश होना है। तुम बच्चों को याद से सतोप्रधान बनना है। जितना पावन बनते हो उतना ऊंच पद पावेंगे। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

माया बहुत पायन्ट्स से हरा देती है। काम की पायन्ट ले तो की कमाई चट हो जाती है। लोभ लेवे क्रोध से, की कमाई चट नहीं होगी। काम महाशत्रु है तो एकदम तुमको गिरा देती है। क्रोध तो सेकण्ड नम्बर दुश्मन है। इन से तुम पतित नहीं बनते हो। क्रोध का हल्का भूत है। काम बड़ा ही भारी भूत है। उन पर ही जीत पानी है। काम पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण जगत जीत थे ना। तो तुमको भी इन जैसा जगत जीत बनना है। अच्छा ओम।